Educrat IAS
ACADEMY
India's Best Mentorship for Civil Services

Contact Details: 9163228921/8910154148

GENERAL STUDIES

Name of the Candidate	Priya Purohit		
Email ID	[redacted]	Roll No.	
Mobile No.	[redacted]	Date	21st Aug, 23

INDEX TABLE		
Q.No	Max.Marks	Marks Obtained
1	100	50
2	12	06
3	12	06
4	12	05
5	12	05
6	12	04
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
Total Marks		76

INSTRUCTIONS

1. Please write your Name, Email, UPSC Roll No. and Mobile number in the answer sheet
2. There are 20 questions printed in English, all questions are compulsory
3. The number of marks carried by a question or part is indicated against it.
4. Answers must be written in the medium authorized in the admission Certificate (English), which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided.
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be struck off.

Any specific message from Educrat IAS Mentors/Evaluators with respect to your copy?
Mentor's Remarks:

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Start Time:	End Time:
Mode of Examination:	Online ☐ Offline ☐
TEST CODE:	Medium of Examination:

100

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 600 शब्दों में निबंध लिखिए :

(a) नवीकरणीय ऊर्जा : संभावनाएँ और चुनौतियाँ

(b) संचार क्रान्ति का महत्व

(c) खेलों का बढ़ता व्यवसायीकरण

(d) खान-पान का स्वास्थ्य पर प्रभाव

d. खान-पान का स्वास्थय पर प्रभाव.

कहते हैं स्वस्थ जीवन ही सफलता की असली पूँजी (कुंजी) होती है। स्वस्थ जीवन का सीधा संम्बन्ध हमारे खान-पान, रहन-सहन के साथ जुड़ा होता है।

प्राचीन योग के अनुसार खाद्य तथा पाद्य से हमारे जीवन का निर्माण होता है। इसके द्वारा हमें तीन प्रकार के गुण भी मिलते है, जैसे – सत्व, रज, और तम। इन गुणों के अनुसरण से हम विभिन्न (विभिन्न) प्रकार की क्रियायें करने में सक्षम होते है।

तो हुआ ना खान-पान की एक अहम भूमिक हमारे स्वास्थय पर?

आज हम देखते है कि नाना प्रकार के रोग बढ़ते जा रहे है। चाहे वह संक्रमित बीमारी हो या असंक्रमित। मधुमेह रोग, उदाहरण के तौर, पर आज एक बड़ी समस्या बन गया है। कई संस्थानों के मुताबिक भारत मधु रोग का एक केन्द्र बनता जा रहा है।

इसका एक बड़ा कारण है, उट-पटांग खाना, कम घूमना अथवा योग न करना। आज भोजन में रसीले व्यंजन, अत्यधिक तेल-घी से युक्त सामग्री तथा बढ़ते रसायन जैसे 'ट्रान्स फैट' के कारण पौष्टिकता कही खो सी गई है।

वहीं दूसरी ओर, अधिक भोजन करना भी लाभदायक नहीं होता, चाहे वह शुद्ध फल आहार ही क्यूँ न हो।

भारत में एक तबका ऐसा है, जिसके ~~के~~ पास आज 'अधिक खाना', एक समस्या बन गया है। (Problem of Plenty)

मोटापा, कैंसर जैसे रोगों को चिकित्सक इसी समस्या से जोड़कर देख रहे हैं। भारत में उदाहरण के तौर पर, 18% (9%) महिलाएँ मोटापे (Obesity) के ग्रस्त में हैं।

खान-पान का एक और प्रमाण है, जिसका भारत जैसे विकसित देशों में और अधिक फैलाव है। वह है, खान-पान की कमी। जब सही मात्रा में, सही पोषण में खाना-पीना नहीं

~~नहीं~~ होता, तब वह कुपोषण जैसे रोग सामने लाता है। इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है, भावी पीढ़ी पर। उदाहरण के तौर पर, भारत में 36% बच्चों में इसके लक्षण देखने को मिलते हैं।

वहीं दूसरी ओर, खाने को नष्ट अथवा व्यर्थ करने में भी हम पीछे नहीं। ~~एक~~ संस्थान के अनुसार विश्व भर में 40% भोजन नष्ट होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि कैसे हम यह सुनिश्चित (सुनिश्चित) करें कि हमारा खान-पान सही, सटीक (सटीक) और हमारे शरीर को भाये, ऐसा हो?

इसके लिए बहुसंयोग उपाय को केंद्र में रखकर चलना होगा। (Multistake-holder). जैसे, पहला, सरकार को यह संज्ञान लेना चाहिए कि समाज में किन लोगों को कैसा तथा कितना आहार प्रदान करवाना होगा। इसके लिए कई व्यवस्थाएं, जैसे, राशन की दुकानें हैं, उसे ~~नई~~ नये प्रकार के भोजन से भी लैस करना होगा।

भोजन मे मिनरल को मिलाना, अच्छा कदम है। (Food Fortification)

दूसरा, सामाजिक जानकारी, योग और सही आहार के प्रति ~~भड़ाने~~ ~~बड़ाने~~ बढ़ाने की जरूरत है।

तीसरा ~~तिसरा~~, व्यवसाय के लोगों को भी स्वत: यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए, कि

वे अस्वस्थ ~~सामग्री~~ सामाग्री का उपयोग न करे।

अंततः, हम सभी को मिलकर मनुष्य जीवन के अनमोल उपहार की कद्र करनी चाहिये – वह है हमारा शरीर। खान-पान को लेकर सदैव सचेत तथा गंभीर होना जरूरी है। बाल्यकाल से ही यह शिक्षा देनी चाहिए।

हमारी ऊर्जा हमारे शरीर से
हमारे शरीर को ऊर्जा हमारे
खान-पान से।

यह कहना ~~अ~~ उचित होगा –
स्वस्थ खाये, स्वास्थय बनाये।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए : 12×5=60

औपनिवेशिक शासन बेहिसाब आँकड़ों और जानकारियों के संग्रह पर आधारित था। अंग्रेजों ने अपने व्यावसायिक मामलों को चलाने के लिए व्यापारिक गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा रखा था। बढ़ते शहरों में जीवन की गति और दिशा पर नज़र रखने के लिए वे नियमित रूप से सर्वेक्षण करते थे, सांख्यिकीय आँकड़े इकट्ठा करते थे और विभिन्न प्रकार की सरकारी रिपोर्टें प्रकाशित करते थे।

प्रारंभिक वर्षों से ही औपनिवेशिक सरकार ने मानचित्र तैयार करने पर खास ध्यान दिया। सरकार का मानना था कि किसी जगह की बनावट और भूदृश्य को समझने के लिए नक्शे ज़रूरी होते हैं। इस जानकारी के सहारे वे इलाके पर ज़्यादा बेहतर नियंत्रण कायम कर सकते थे। जब शहर बढ़ने लगे तो न केवल उनके विकास की योजना तैयार करने के लिए बल्कि व्यवसाय को विकसित करने और अपनी सत्ता मज़बूत करने के लिए भी नक्शे बनाये जाने लगे। शहरों के नक्शों से हमें उस स्थान पर पहाड़ियों, नदियों व हरियाली का पता चलता है। ये सारी चीज़ें रक्षा संबंधी उद्देश्यों के लिए योजना तैयार करने में बहुत काम आती हैं। इसके अलावा घाटों की जगह, मकानों की सघनता और गुणवत्ता तथा सड़कों की स्थिति आदि से इलाके की व्यावसायिक संभावनाओं का पता लगाने और कराधान (टैक्स व्यवस्था) की रणनीति बनाने में मदद मिलती है।

उन्नीसवीं सदी के आखिर से अंग्रेजों ने वार्षिक नगरपालिका कर वसूली के ज़रिए शहरों के रखरखाव के वास्ते पैसा इकट्ठा करने की कोशिशें शुरू कर दी थीं। टकरावों से बचने के लिए उन्होंने कुछ ज़िम्मेदारियाँ निर्वाचित भारतीय प्रतिनिधियों को भी सौंपी हुई थीं। आंशिक लोक-प्रतिनिधित्व से लैस नगरनिगम जैसे संस्थानों का उद्देश्य शहरों में जलापूर्ति, निकासी, सड़क निर्माण और स्वास्थ्य व्यवस्था जैसी अत्यावश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराना था। दूसरी तरफ, नगरनिगमों की गतिविधियों से नए तरह के रिकॉर्ड्स पैदा हुए जिन्हें नगरपालिका रिकॉर्ड रूम में सँभालकर रखा जाने लगा।

शहरों के फैलाव पर नज़र रखने के लिए नियमित रूप से लोगों की गिनती की जाती थी। उन्नीसवीं सदी के मध्य तक विभिन्न क्षेत्रों में कई जगह स्थानीय स्तर पर जनगणना की जा चुकी थी। अखिल भारतीय जनगणना का पहला प्रयास 1872 में किया गया। इसके बाद, 1881 से दशकीय (हर 10 साल में होने वाली) जनगणना एक नियमित व्यवस्था बन गई। भारत में शहरीकरण का अध्ययन करने के लिए जनगणना से निकले आँकड़े एक बहुमूल्य स्रोत हैं।

जब हम इन रिपोर्टों को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि हमारे पास ऐतिहासिक परिवर्तन को मापने के लिए ठोस जानकारी उपलब्ध है। बीमारियों से होने वाली मौतों की सारणियों का अन्तहीन सिलसिला, या उम्र, लिंग, जाति एवं व्यवसाय के अनुसार लोगों को गिनने की व्यवस्था से संख्याओं का एक विशाल भंडार मिलता है जिससे सटीकता का भ्रम पैदा हो जाता है। लेकिन इतिहासकारों ने पाया है कि ये आँकड़े भ्रामक भी हो सकते हैं। इन आँकड़ों का इस्तेमाल करने से पहले हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि आँकड़े किसने इकट्ठा किए हैं, और उन्हें क्यों तथा कैसे इकट्ठा किया गया था। हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि किस चीज़ को मापा गया था और किस चीज़ को नहीं मापा गया था।

(a) औपनिवेशिक शासन चलाने में आँकड़ों का क्या महत्व था?

(b) औपनिवेशिक शासकों के लिए मानचित्र क्यों महत्त्वपूर्ण थे?

(c) औपनिवेशिक अभिलेखों के माध्यम से शहरीकरण का अध्ययन किस प्रकार किया जा सकता है?

(d) इतिहासकार आँकड़ों को सदैव अहानिकर क्यों नहीं मानते?

(e) औपनिवेशिक शासकों की करों से संबंधित नीति क्या थी?

(a) औपनिवेशिक शासन चलाने में आकड़ों का कई महत्व था जैसे जानकारियों का संग्रह करना, विभिन्न प्रकार की रिपोर्ते तैयार करना। इसका उपयोग वे अपने हित हेतु भी करते थे जैसे कर वसूली करना, ~~[illegible]~~ धन बटवारा करना आदि। यह जीवन पर हो रही गति-विधि पर नजर रखने के लिए भी था।

(b) औपनिवेशिक शासन के लिए मानचित्र जगह की बनावट को समझने के लिए जरूरी था। साथ ही, स्थान पर नियंत्रण कायम करना तथा व्यवसाय के अवसर को समझने के लिए भी था। मानचित्र से वहां के ~~प्राणी~~ वातावरण के भौगोलिक तथा रक्षा संबंधी मामलों ~~को~~ पर पकड़ रखने के लिए भी था। अंततः यह कराधान (टैक्स) की व्यवस्था को तैयार करने के लिए भी था।

(c) औपनिवेशिक शासनों का शहरीकरण ~~अध्ययन~~ अध्ययन कई प्रकारों से किया जा सकता है।

पहला, नियमित रूप से आकड़ों की गिनती

दूसरा, मानचित्र तथा जनगणना के माध्यम से, शहरों का रहन-सहन, बनावट, व्यवस्थायें जैसे स्वास्थ्य, सड़क निर्माण को भी समझा जा सकता है। अंततः इनके आधार पर ~~नई~~ नई ~~रिपोर्ट~~ रिपोर्टें भी तैयार ~~किया~~ की जाती है।

(d) इतिहासकार आकड़ां को सदैव अधिकार नही मानते क्योंकि, आकड़े तैयार करने वालो का कोई उद्देश्य भी हो सकता है। इसमें कई जानकारियों को छिपाया भी जा सकता है, यह पूर्ण निष्पक्ष नही हो सकता। इसमें आकड़ों के साथ छेड़-छाड़ करने की आशंका भी होती है।

(e) औपनिवेशिक शासक, करो को मुनाफे का उद्गम देखते थे। इसके हेतु वे आकड़ा, मानचित्र तथा रिपोर्टों के आधार पर कर तैय करते थे। साथ ही, स्थानिय नवीनीकरण के लिए लिया कर भी वसूल होते थे, जैसे नगरपालिका कर। इस जिम्मेदारी को वे अकसर भारतिय प्रतिनिधियों को सौंप देते, जिससे वे टकराव से बचे रहें। साथ ही व्यवसाय के भी जरूरत समझ, कर वसूली करते थे।